

कै. वे. शा. सं. त्रिंबकशास्त्री भर घांचे पुत्र
शिवरामशास्त्री भर घांचे हस्ताक्षर.

सुभाषित - वही न यंत्र.



क४
38/15

(1)

॥ श्रीगजानन ॥

कार्यपणोत्रोत्पन्नस्य समनरा
महिमं पुत्रमाहादेव शरिरे आ
रोग्यार्थं सखीरिद्धं त्वयं न वयं
दिदृशाकाले सुचिंतं सकल विडा परि
हारार्थं तथापि शास्त्रोक्तं न विना विवि
ध उपद्रव निरस्त न पूर्वक दिव्य युवात्
यं श्रीगुरुं जयमाहारुद्रव ता मित्यं
षट्पञ्चनयुक्त आद्योत्तरात्तत्सुं ज
माहात्म्यं जपमहं करिष्ये तत्रोदनि
रविमत्तालि धर्यं माहात्म्यं पविषु जनेन
करिष्ये

(2)

अकथहचकं मंत्रतंत्रेविवेचितं
वैकमहः

अ क थ ह	उ ड प	आ ख र	ऊ च फ
ओ ङ व	इ श ष	आ ङ श	लृ ग यं
इ घ न	ऊ ज भ	इ ग ध	ऊ छ ब
अः त स	ए ठ ल	अ ण ष	ऐ ढ र

तपसा स्वर्ग
गमनं भोगो
दानेन जा
यते ॥ ज्ञानेन
मोक्षो विजे
यः सतीर्थस्ना
नादघः क्षयः

॥ ११ ॥

(३)

श्री

नाली के सन मी
भरहिनि भूतों
न के पंरा थावि
ना गंधर्वा पुनरेन
दुखरनि चरे चक्रे
न दुखारकः ॥ पत्री
त सति भोजन वंच
धनुषा जी रातु य
स्मा भवज्जी वांते
वसतां रिपु क्षय
करो देवः स पापा
हरः ॥ ११ ॥

(3A)



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com